ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—22/02/2021 वीर शिवाजी

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

पंद्रहवीं, सोलहवीं, सत्रहवीं सदी को इतिहास का 'मध्ययुग' कहा जाता है। उस युग का इतिहास साहस, वीरता, त्याग तथा बलिदान से भरा है। मुगलों का राज्य बहुत उन्नत अवस्था को पहुँच गया था। लड़ाइयाँ बहुत होती थीं, किंतु लोग अपने लिए नहीं लड़ते थे, अपने देश के लिए लड़ते थे। ऐसे ही समय, तुलसीदास के मरने के चार साल बाद, महाराष्ट्र के निर्माता शिवाजी का जन्म संवत 1684 में हुआ। इनके पिता का नाम शाहजी था जो चित्तौड़ के राणा लक्ष्मणसिंह के "कुल" के कहे जाते हैं। शिवाजी की माता कानाम जीजाबाई था। चार साल पहले शाहजी के एक पुत्र हो चुका था। इसके बाद उनको युद्ध में ही अधिकतर रहना पड़ा। कहा जाता है-एक रात को शाहजी ने सपना देखा एक साधु चीथड़ा लपेटे अंग में भभूत पोते सामने खड़ा है। इनके हाथ में एक आम उसने दिया और कहा, इसका आधा भाग अपनी पत्नी को खिलाओ और तुम्हारे एक पुत्र होगा जो शिवाजी का अवतार होगा।' शाहजी की नींद खुल गयी। उन्होंने अपने हाथ में आम पाया। उसका आधा भाग उन्होंने जीजाबाई को दे
~~~~~~~~~~

दिया। कुछ दिनों बाद शिवाजी का जन्म हुआ। साधु की बातों का विश्वास करके उन्होंने पुत्र का नाम शिवाजी रखा।

शाहजी ने एक दूसरा विवाह भी कर लिया और शाहजी ने एक दूसरा विवाह भी कर लिया और जीजाबाई पूना के निकट शाहजी की जमींदारी में रहने लगीं। ज़मींदारी का प्रबंध दादा जी कोंणदेव करते थे। जिस समय जीजाबाई यहाँ आयी, ज़मींदारी चौपट हो चुकी थी किंतु कोणदेव की चतुराई तथा योग्यता से वह फिर पनपी। कोंणदेव ने शिवाजी को घुड़सवारी तथा धनुष-बाण चलाने का अभ्यास कराया। उन्होंने तथा शिवाजी की माता ने पुराने ग्रंथों से रामायण तथा महाभारत की कथाएँ सुनायीं। शिवाजी, भीम और अर्जुन बनने की कल्पना करने लगे। अठारह साल की अवस्था होते-होते शिवाजी निर्भीक, साहसी और श्रमी हो गये। उनकी अभिलाषा हुई कि अपने प्रदेश को बीजापुर के शासन से स्वतंत्र कर लूँ।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”

🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲